गुरुपूर्णिमा

गुरुपादुकापूजन

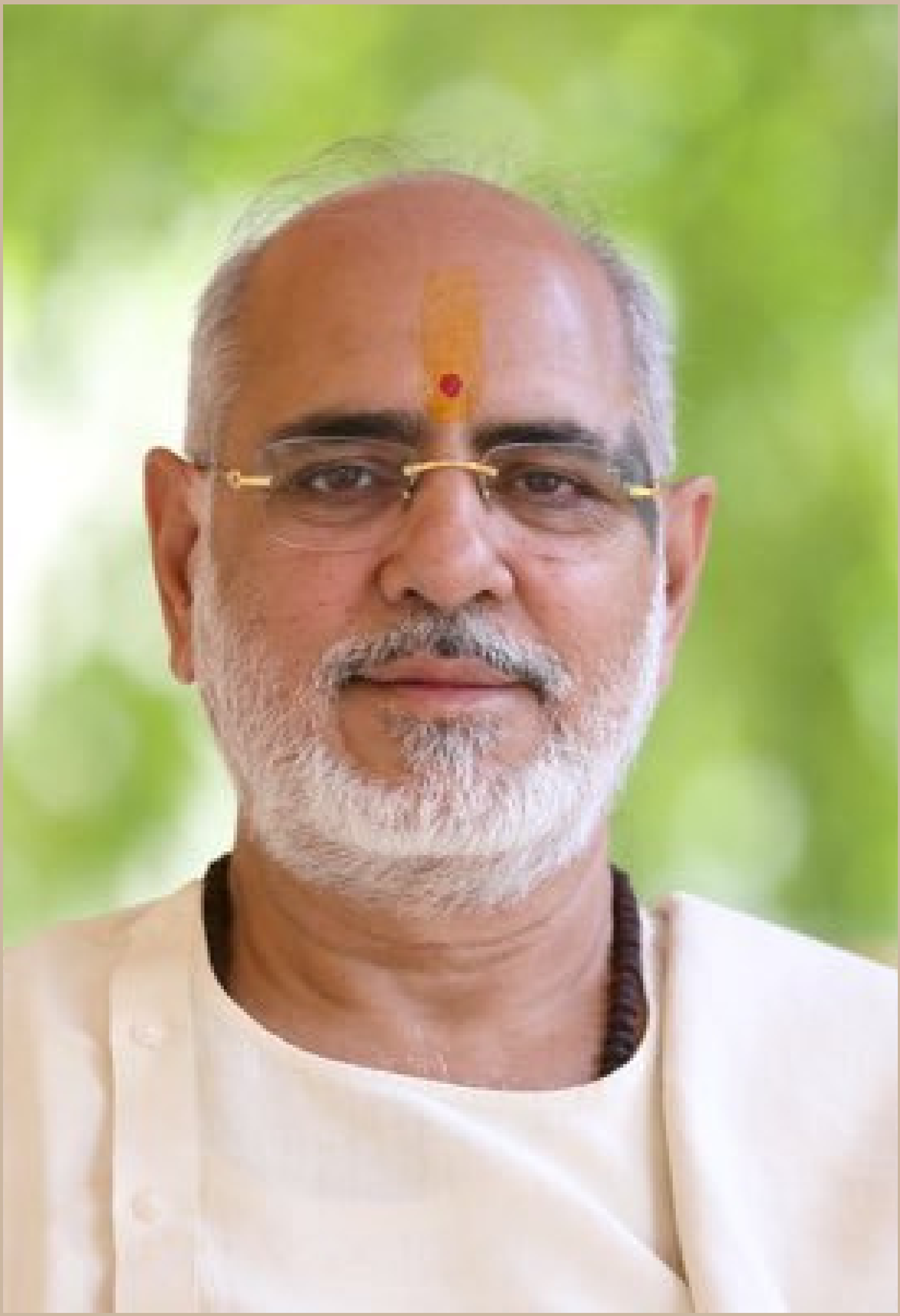

॥ Sandipani ॥

वसुधैव कुटुंबकम्

Contents Page

Page 7	Step 1	संकल्पः
Page 8	Step 2	ध्यानम्
Page 9	Step 3	आवाहन-आसनम्
Page 10	Step 4	पाद्यम्
Page 11	Step 5	अर्घ्यः
Page 12	Step 6	आचमनीयम्

www.sandipani.org

वसुधैव कुटुंबकम्
॥ Sandipani ॥

Contents Page

Page 13	Step 7	स्नानम् (कलावती)
Page 14	Step 8	पञ्चामृतस्नानम् (कलावती)
Page 15	Step 9	गन्धोद्वर्तनतीर्थोदकस्नानम्
Page 16-17	Step 10	शुद्धोदक-स्नानम्
Page 18	Step 11	वस्त्रम्
Page 19	Step 12	यज्ञोपवीतम्

www.sandipani.org

Contents Page

Page 20	Step 13	गन्धाक्षतान्
Page 21	Step 14	पुष्पाणि
Page 22	Step 15	सर्वसौभाग्यद्रव्याणि
Page 23	Step 16	धूपदीपौ
Page 24	Step 17	नैवेद्यम्
Page 25-27	Step 18	दक्षिणा-निराजनम्-पुष्पापञ्जलिः

www.sandipani.org

वसुधैव कुटुंबकम्
॥ Sandipani ॥

Contents Page

Page 28	Step 19	**प्रार्थयेत्**

गुरुपूर्णिमा निमित्त सद्गुरु भगवान के पूजन हेतु निम्नलिखित पूजा - सामग्री तैयार रखें ताकि अच्छी तरह से पूजा हो सके

- नैवेद
- धूप
- दीप
- .पुष्प
- पुष्पमालिका
- .कलश
- पंचामृत
- .आसन
- तौलीया (नेपकीन)
- आरती
- थाली

- चमच
- कटोरी
- वस्त्र
- चन्दन
- पंचपात्र
- . अक्षत
- अबीर
- .गुलाल
- . कुंकुम
- यज्ञोपवीत
- .इत्र
- वस्त्र

गुरुपादुकापूजन

-: संकल्पः :-

अद्य शुभावसरे व्यासपूर्णिमा-महोत्सवान्तर्गते
यथा रामचरितमानसे समर्पितप्रपन्न-शिष्यानां च कृते

देहु भगति रघुपति अति पावनि।
त्रिबिध ताप भव दाप नसावनि॥

प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु।
होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु॥

परमकारुणिक-श्रीहरेरधो भागे अचिन्त्य-अपरिमित-अव्यक्त-असीमित-असामान्य-अक्लेश-अखिलासमस्त-भक्त-शिष्य-मन-जन-हृदि स्थित-श्रीसद्गुरुचरणसरोज-पूजनेन रोग-भोग-भय-नाशार्थं ज्ञान-भक्ति-फलप्राप्त्यर्थं पूजायां विशेषणे 'र' इति आदिवर्णेन अस्मद् गुरुवर्य्याणा चरणपादुकापूजनमहं करिष्ये।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्करररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
बरनौ रघुवर बिमल जसु, जो दायक फल चारि॥

सोरठा
बंदउँ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज, जासु बचन रबि कर निकर॥

ॐ रम-रमण-रमणीयरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
ध्यानं समर्पयामि॥

चौपाई

तिन्ह सहस्र महुँ सबसुख खानी।
दुर्लभ ब्रह्म लीन बिग्यानी॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा।
स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा॥

चौपाई

सीतलता, सरलता मयत्री।
द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री॥

ए सब लच्छन बसहिं जासु उर।
जानेहु तात संत संतत फुर॥

ॐ रत-रति-रत्नरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
आवाहयामि आसनं च समर्पयामि॥

चौपाई

चरन पखारि कीन्हि अति पूजा।
मो सम आजु धन्य नहिं दूजा॥

श्रीगुरुपदनख मनिगन जोती।
सुमिरत दिव्यदृष्टि हिय होती॥

ॐ रञ्जक-रजसानु-रजहन्तारूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
पाद्यं समर्पयामि॥

(रञ्जक=प्रेरक4 रजसानु=आत्मा, रजहन्ता=लालचको तोड़नेवाले)

छन्द

सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ।
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिएँ ॥

ॐ रस्य-रञ्जन-रभस्रूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
अर्घ्यं समर्पयामि ॥

(रस्य=रससे भरे हुए, रञ्जन=संतुष्ट करना, रभस्=प्रचण्ड बुद्धिमान्)

चौपाई

एक कलस भरि आनहिं पानी।
अँचइअ नाथ, कहहिं मृदु बानी॥

दोहा

पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लेइ पार॥

ॐ रस-रसिक-रत्नमयरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
आचमनीयं समर्पयामि॥

चौपाई

दरस परस मज्जन अरु पाना।
हरइ पाप, कह बेद पुराना॥

नदी पुनीत, अमित महिमा अति।
कहि न सकइ, सारदा बिमल मति॥

ॐ रवि-रश्मि-रश्मिवत्रूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
स्नानं समर्पयामि॥

(रवि=पर्वत)

दोहा

लीला सगुन जो कहहिं बखानी।
सोइ स्वच्छता करइ मल हानी॥

प्रेम भगति जो बरनि न जाई।
सोइ मधुरता, सुसीतलताई॥

ॐ ऋ-ऋक्थ-ऋक्षीशरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि॥

(ऋ=कार्य करने उत्तेजित करना, ऋक्थ=सम्पत्ति,
ऋक्षीश=चन्द्र)

दोहा

मज्जहिं सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुंदर स्याम सरीर॥

ॐ ऋच्-ऋजु-ऋतुरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
गन्धोद्वर्तनतीर्थोदकस्नानं समर्पयामि॥

सर्वस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

(ऋच्=स्तुति, ऋजु=सरल, ऋतु=प्रकाश)

गुरुपादुकापूजन

-: शुद्धोदक-स्नानम् :-

Sandipani Vidyaniketan 13-07-2022

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

सोइ सादर सर मज्जनु करई।
महा घोर त्रयताप न जरई॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

मुद मंगलमय संत समाजू।
जो जग जंगम तीरथराजू॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा।
सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

बिधि निषेधमय कलिमल हरनी।
करम कथा रबिनंदनि बरनी॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

हरि हर कथा बिराजति बेनी।
सुनत सकल मुद मंगल देनी॥
(गुरु भगवान सद्गुरु भगवान, गुरु भगवान सद्गुरु भगवान)

मज्जन फल पेखिअ ततकाला।
काक होहिं पिक बकउ मराला॥

ॐ ऋdध्-ऋद्ध-राद्धरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

(ऋध्=सम्पन्न होना, ऋद्ध=उत्कर्ष, राद्ध=प्रसन्न)

छन्द

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई॥

मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥

ॐ रूढ-रूपसम्पत्-रामणीयकरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

(रूढ=विकसित, विस्तृत)

भए कुमार जबहिं सब भ्राता।
दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई।
अलप काल बिद्या सब आई॥

ॐ रिच्-रिपुंजय-रिरंसारूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

(रिच्=निर्मल करना, रिरंसा=रमण करनेकी इच्छा)

प्रथम तिलक, बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥

सुत बिलोकि, हरषीं महतारी।
बार बार, आरती उतारी॥

ॐ रुच्-रुचिर-रुच्यरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
गन्धाक्षतान् समर्पयामि॥

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी।
गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥

अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा।
बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा॥

ॐ रुषित्-रुपिन्-रूपसम्पत्रूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
पुष्पाणि समर्पयामि॥

(रुषित्= सजा हुआ, रुपिन्=मूर्तिमान्,
रूपसम्पत्=सुन्दरताकी उत्कृष्टता)

चौपाई

करि मज्जन प्रभु भूषन साजे।
अंग अनंग देखि सत लाजे॥

रघुपति भगति सजीवन मूरी।
अनूपान श्रद्धा मति पूरी॥

ॐ रै-रेचक-रूपीरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
सर्वसौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥

(रै=धन, रेचक=निर्मल करनेवाला)

चौपई

अगर धूप बहु जनु अँधिआरी।
उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी॥

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा।
दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥

ॐ रोक-रोचक-रोचनरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
धूपदीपौ समर्पयामि॥

धूपदीपान्ते आचमनीयं समर्पयामि।
(रोक=जहाज, रोचन=उज्जवल)

गुरुपादुकापूजन

-: नैवेद्यम् :-

एहि बिधि सबहीं भोजनु कीन्हा।
आदर सहित आचमनु दीन्हा॥

बिबिध भाँति, भोजन करवावा।
मुनिबर हृदयँ हरष अति पावा॥

पंच कवल, करि जेवन लागे।
गारि गान, सुनि अति अनुरागे॥

भाँति अनेक, परे पकवाने।
सुधा सरिस, नहिं जाहिं बखाने॥

ॐ रोदस्-रोमांचित-रोहरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
नैवेद्यं निवेदयामि॥

(रोदस्=आकाश & पृथ्वी, रोह=विकास)

श्रीसद्गुरवे नमः भावदक्षिणाj समर्पयामि

ह्रीमिति मन्त्रेण आरार्तिक्यं प्रज्वाल्य “रत्नेश्वर्यै नमः” इति सम्पूज्य..........

जय राम रमा रमनं समनं।
भव ताप भयाकुल पाहि जनम॥

अवधेस सुरेस रमेस बिभो।
सरनागत मागत पाहि प्रभो॥

दससीस बिनासन बीस भुजा।
कृत दूरी महा महि भूरी रुजा॥

रजनीचर बृंद पतंग रहे।
सर पावक तेज प्रचंड दहे॥

महि मंडल मंडन चारुतरं।
धृत सायक चाप निषंग बरं॥

मद मोह महा ममता रजनी।
तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥

मनजात किरात निपात किए।
मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे।
बिषया बन पावँर भूली परे॥

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए।
भवदंघ्री निरादर के फल ए॥

भव सिन्धु अगाध परे नर ते।
पद पंकज प्रेम न जे करते॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं।
जिन्ह के पद पंकज प्रीती नहीं॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह के।
प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के॥

नहीं राग न लोभ न मान मदा।
तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा॥

एहि ते तव सेवक होत मुदा।
मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥

गुरुपादुकापूजन

दक्षिणा - निराजनम् - पुष्पाञ्जलिः

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ।
पड़ पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥

सम मानि निरादर आदरही।
सब संत सुखी बिचरंति मही॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे।
रघुबीर महा रंधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी।
भव रोग महागद मान अरी॥

गुण सील कृपा परमायतनं।
प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं।
महिपाल बिलोकय दीन जनं॥

जय राम रमा रमनं समनं।
भव ताप भयाकुल पाहि जनम॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ।
पड़ पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥

सम मानि निरादर आदरही।
सब संत सुखी बिचरंति मही॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे।
रघुबीर महा रंधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी।
भव रोग महागद मान अरी॥

गुण सील कृपा परमायतनं।
प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं।
महिपाल बिलोकय दीन जनं॥

जय राम रमा रमनं समनं।
भव ताप भयाकुल पाहि जनम॥

बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे।
जाचक सकल अजाचक कीन्हे॥

नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी।
बार बार कुसुमांजलि छूटी॥

श्रीसद्गुरवे नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

गुरुपादुकापूजन

-: प्रार्थयेत् :-

बार बार मागउँ कर जोरें।
मनु परिहरै चरन जनि भोरें॥

सुनि बर बचन, प्रेम जनु पोषे।
पूरनकाम रामु परितोषे॥

मोरें तुम्ह प्रभु, गुर पितु माता।
जाउँ कहाँ तजि, पद जलजाता॥

करनधार, सदगुर दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज, सुलभ करि पावा॥

तव नाम जपामि, नमामि हरी।
भव रोग महामद मान अरी॥

ॐ रोहि-रौद्र-रौहिणरूपाय श्रीसद्गुरवे नमः।
प्रार्थनापूर्वक नमस्कारन् समर्पयामि॥

(रोहि=धार्मिक पुरुष, रौद्र=रुद्रका भक्त, रौहिण=चन्दनका वृक्ष)

करि प्रनामु पूजा कर जोरी।
बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी॥
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा।
भयउँ आजु मैं पूरन काजा॥
ॐ अनेन व्यासपूर्णिमा-निमिताङ्गभूतेन कृतेन
श्रीसद्गुरुपूजनेन श्रीहरिगुरुः प्रीयतान् न मम।

गुरुपादुकापूजन

-: गौसेवा :-

अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं।
देहु धेनु सब भाँति बनाईं॥
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई।
पुनि पठए मुनिबृंद बोलाई॥

गुरुपादुकापूजन

-: Brahmanandam Verse :-

Sandipani Vidyaniketan

13-07-2022

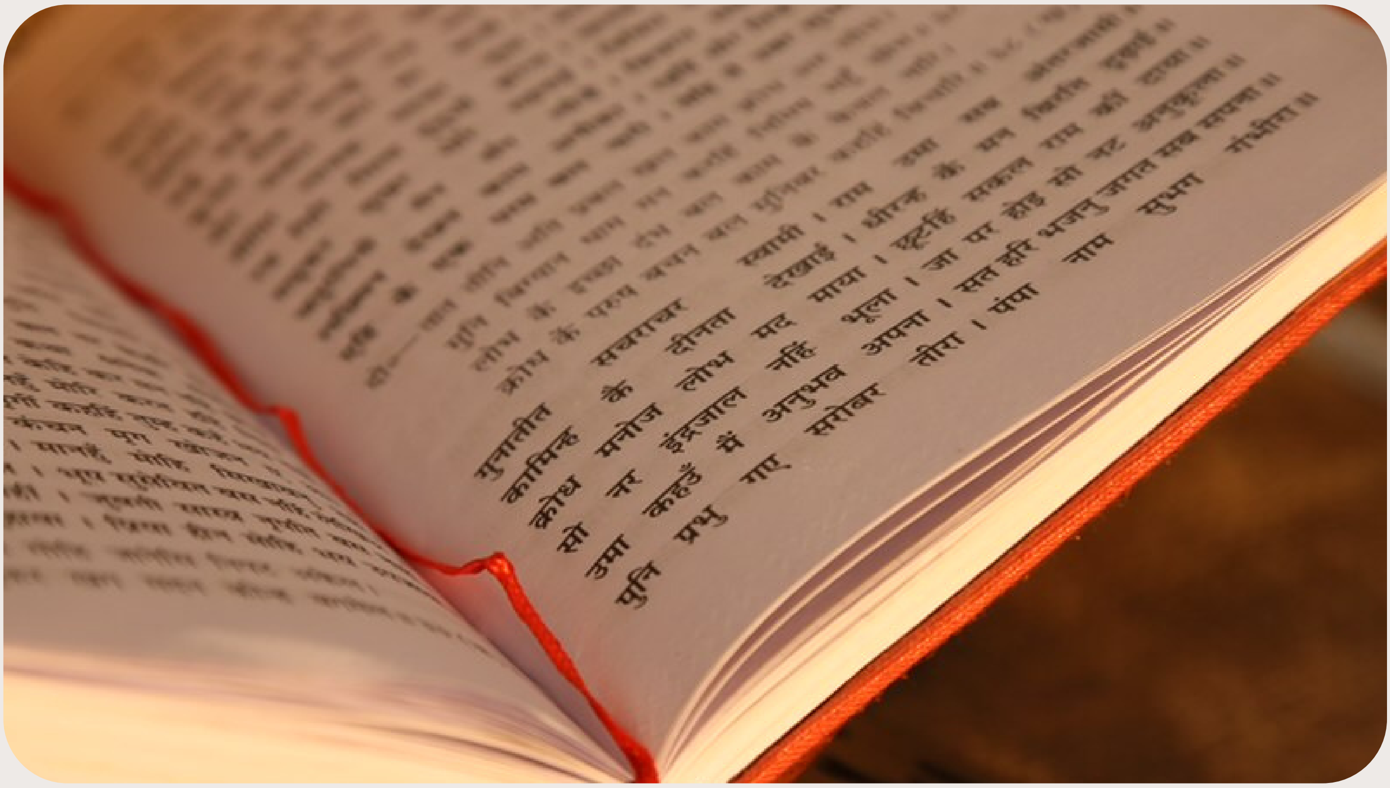

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि

brahmānandaṃ paramasukhadaṃ kevalaṃ jñānamūrtiṃ
dvandvātītaṃ gaganasadṛśaṃ tatvamasyādilakṣyam
ekaṃ nityaṃ vimalamacalaṃ sarvadhīsākṣibhūtaṃ
bhāvātītaṃ triguṇarahitaṃ sadguruṃ taṃ namāmi

गुरुपादुकापूजन

-: Guru Pāduka Pañcakam :-

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः

अर्थ : - श्री गुरुमहाराज को नमस्कार है । गुरुकी चरणपादुका को नमस्कार है । परमगुरु को नमस्कार है । परमगुरु की चरणपादुका को नमस्कार है । आचार्यसिद्धेश्वर की चरणपादुका को नमस्कार है । गुरुचरणपादुका को बार - बार नमस्कार है ।

ऐंकार ह्रींकार रहस्ययुक्ता श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या ।
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२ ॥

अर्थ : - जो वाणी के बीजमंत्र ऐं के तथा माया के बीज मंत्र ह्रीं के रहस्योंसे युक्त हैं और जो षोडशी बीजमंत्र श्रीं के गूढ अर्थ और महानविभूति स्वरूप हैं तथा जो ओंकार के मर्म को प्रतिपादित करनेवाली हैं ; उन गुरुदेवकी चरणपादुका को बार - बार नमस्कर है ।

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृहोमादिसर्वाकृतिभासमानम् । यद्ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३ ॥

अर्थ- जो ब्रह्म के विभिन्न स्वरूपों होत्राग्नि , हौत्राग्नि - हविष्य , याज्ञिक - होमादि सभीका बोध करानेवाली है , उन गुरुचरणपादुका को बार - बार नमस्कार है ।

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम् । बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥४ ॥

अर्थ जो अन्तःकरणमें रहनेवाले काम - क्रोधादि सर्पो के विषका नाश करनेवाली गारुडी मन्त्र के समान है , जो विवेक वैराग्य रूप निधि को देनेवाली है । जो सत्य बोधको प्रदान कर शीघ्र मोक्ष देनेवाली है , उन श्रीगुरुकी पादुका को बार - बार नमस्कार है । :

अनन्तसंसारसमुद्रतार नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् । जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥५ ॥

अर्थ : - जो अनन्त संसार - सागर को पार करनेके लिए नौका के समान है , जो गुरुभक्ति को देनेवाली है , जो जडतारूपी समुद्र को सुखानेके लिए वडवानल अग्नि के समान है , उन गुरुचरणपादुका को बार - बार नमस्कार है ।

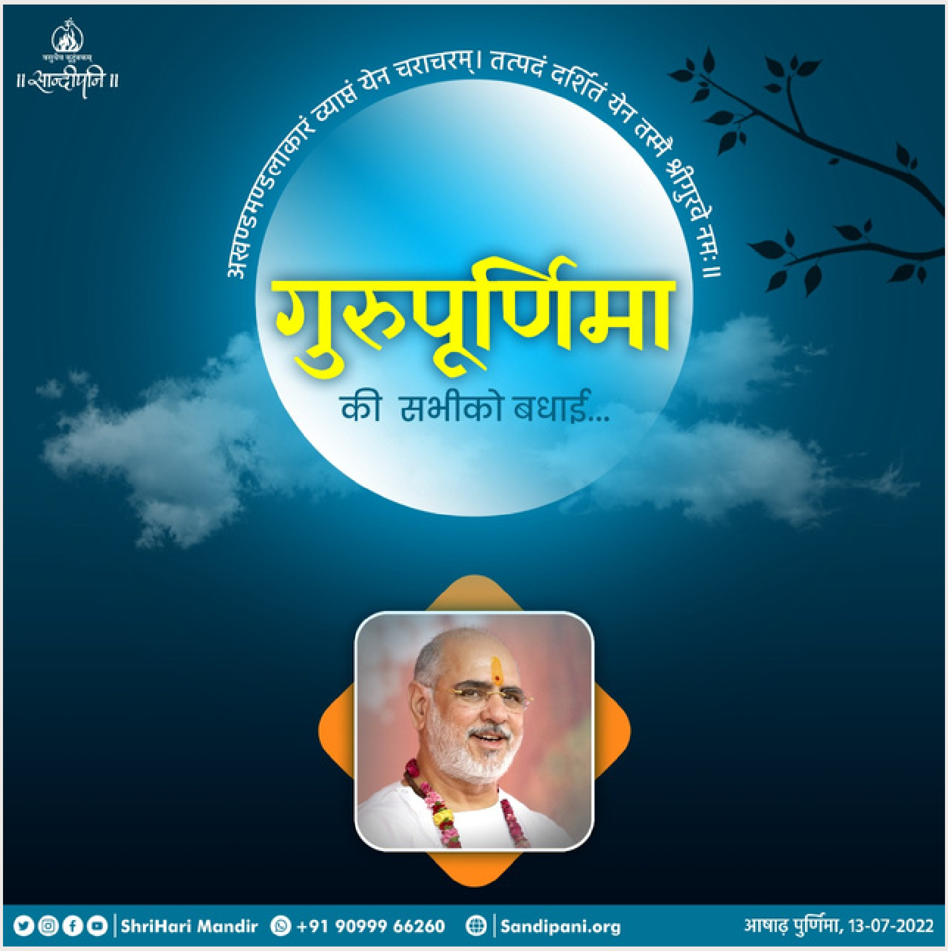
॥ सान्दीपनि ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
गुरुपूर्णिमा
की सभीको बधाई...
ShriHari Mandir
+91 90999 66260
Sandipani.org
आषाढ़ पुर्णिमा, 13-07-2022

Guru
Poornima
13-07-2022 | 9.00 am to 1.00 pm IST
Sandipani, Porbandar
zoom
Meeting ID
863 4092 9306
Passcode
ShriHari
• Dhvajarohan Pooja
• Paduka Poojan
• Guru Poornima Updesh
• Guru Poornima Vandan, Pranaam
Manorathi :
Smt. Ranjanben & Avinashbhai Bhogayata Family
Sandipani Vidyaniketan
Sandipani.org